चहकने की ललक

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : +91 8434170118

तक्ष शिला

अंक – सत्रह, मार्च 2020 – सितम्बर 2020

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

मैं हूं 'चहकने की ललक' इस बार अंक-17 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे लिए मेरे बारे में बहुत अच्छा लिखा है। इससे पता चलता है, कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी कुछ बदलाव हुआ है, इस बार तो मेरे प्यारे लेखकों ने मुझे खुदसे तैयार किये है। सर्व प्रथम 2014 में मुझे प्रकाशित किया गया, जिसमें मेरे बाल लेखकों ने अपनी रचना को प्रदर्शित किये। उस दरमियां उन्हें बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिए अपनी रचना लिखते रहे आशा करता हूं कि आगे भी ऐसे ही लिखेंगे। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चे अपनी-अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं।

आपका साथी मैं
चहकने की ललक, अंक-17

हमार बोली — निबंध

हमार पापा खेत में सब्जी बोएलन ज्यादा सब्जी उपजे ला त बाजार में बेचेलन। सब्जी के खेती करे खातिर ज्यादा मेहनत करे के पड़ेला, हमरा घर के पास में सब्जी के खेती होला अउरी घर से दूर खेत में धान, गेहूं, मक्का के खेती कईल जाला। हमरा घर के सब लोग मिल-जूल के खेती के कार्य में मेहनत करेलन। हमरा धान के खेती करे में बड़ा मजा आवेला बारिश में खुब नाहाये के मिलेला पाको में लोटालोटा के खेलेनी फिर घर पर जाके कल के पानी से नहा लेनी।

विनित कुमार गुप्ता, कक्षा-3, भवराजपुर

खुशी कुमारी
कक्षा 3
मियाँ के भटकन

अंशु कुमारी
कक्षा 4
गाँव बड़हुलिया

खेती-बारी — लेख

धान की खेती अगस्त के महीने में होती है। धान की खेती तीन से चार महीनों के बीच में होती है। धान से हमलोग को चावल की प्राप्ती होती है। चावल से हमलोगों को शक्ति मिलती है। हमारे गांव में धान की खेती बहुत होती है। हर साल हमारे गांव के किसान बहुत मेहनत करके धान की खेती करते हैं। बारिश के बाद खेतों में धान की फसल लहलहाते हुए बहुत सुंदर लगते हैं। इससे प्रकृति की सुंदरता बढ़ती है। ज्यादा बारिश से बहुत लोगों की फसल बर्बाद हो जाती है।

युवराज कुमार, कक्षा-7, गांव बडहुलियां

गाँव की दुकान — निबंध

हमारे घर कोई भी मेहमान आते हैं तो फटा-फट अपने गांव की दुकान से नाश्ता लेकर आती हूं। और नाश्ता के लिए बिस्कूट, नमकीन नाश्ता करने के लिए देती हूं, मेरे गांव की दुकान में बहुत सी चीजे मिलती हैं, जैसे कुरकुरे, मिठाई, चॉकलेट, नमकीन, बिस्कुट, मिक्चर, कॉपी, पेन इत्यादि चीजे जब भी कोई मेहमान आते हैं, तो चाय शरबत भी दिया जाता है। मेरी मां जल्दी से चाय बना देती है, एवं मेरी बड़ी दीदी शरबत जल्दी से बना देती हैं उसे मेहमानों को पिलाया जाता हैं मेरे गांव में दुकान को गुमटी भी बोला जाता है।

अमृता कुमारी,
कक्षा-7, ग्राम-बलियां

कार्तिक
कक्षा 7, बड़हुलिया

कविता

आयुष पांडेय
बाल पथिक, कक्षा 7
गाँव गोंठि

कोरोना माहामारी, कोरोना माहामारी
कोरोना है खतरनाक बीमारी
पुरे देश को किया तबाह
सबके जुबान पर इसका नाम
इस बीमारी से सभी है परेशान

जल्दी-जल्दी मास्क लगाओ
दूरी-बनाओ दूरी-बनाओ
घर में रहो बाहर मत जाओ
हाथ में सेनीटाइजर लगाओ
कहना मेरी मान जाओ
घर-आंगन में रखो सफाई

रिंकी कुमारी, कक्षा-4, मियां के भटकन

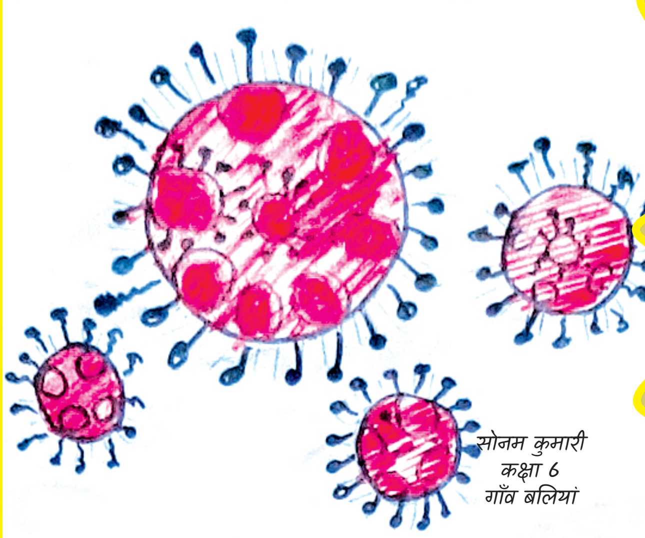
सोनम कुमारी
कक्षा 6
गाँव बलियां

अपनी बात — कोरोना

कोरोना एक माहामारी है, यह जान लेवा बीमारी है, यह बीमारी चाइना के एक शहर से आया है। कोरोना के वजह से हमारे विद्यालय बंद हो गया, और बाजार भी बंद हो गया। कोरोना से हमें बचकर रहना चाहिए। हमें समय-समय पर हाथ धोना चाहिए, हाथ को सेनीटाईज करना चाहिए और घर में रहना चाहिए, मैं अपने गांव से बाहर होसटल में रहकर पढ़ाई करते थे, वहां मुझे बहुत अच्छा लगता था। मैं दोस्तों के साथ खेलता था एवं पढ़ाई भी करता था लेकिन कोरोना के कारण सभी अपने-अपने गांव चले गये।

कृष कुमार, कक्षा-6, ग्राम बड़हुलिया

पहेली

गोल हूं पर गेंद नहीं,
उड़ता हूं बिना पंखों के
पूंछ पकड़कर खेले बच्चे
फिर भी मेरे आंसू न निकलते
(गुब्बारा)

तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान
(जहाज)

मेरी ऊँट की बैठक हिरन सी तेज चाल।
तो बताओ कौनसा जानवर हूं मैं
जिसके पूंछ न बाल।
(मेंढक)

प्रिया कुमारी, कक्षा-6, बाबु के भटकन

आपबीती — करने को कुछ

लॉकडाउन होने के कारण मेरा मन बिल्कुल नहीं लग रहा था मैं घर बैठे-बैठे बोर हो रही थी सोची कुछ नया करती हूं, मैंने एक तोता का चित्र बनाया, और तोता क्रमबद्ध तरीके से बनाती गई जब मैं अंतिम चित्र बनाई तो मुझे लगा चित्र बनाने से मेरी चित्रकला अधुरी रह जायेगी इसलिए मैं उस चित्र को एक कहानी का रूप दे दी मुझे बहुत खुशी मिली।

मुन्नी कुमारी बाल पथिक, वर्ग-7, घर गोठी

आने वाला थीम

पेड़-पौधे
पसंदीदा खाना
मेरा स्कूल
गाँव की सड़के

शिक्षकों की कलम से

एक गांव में दो दोस्त रहते थे। दोनों में बहुत एकता थी। एक नाम चिन्टू तो दुसरे का नाम मिन्टू था। दोनों साथ-साथ ही अपना सारा काम करते थे। चिन्टू दोनों में ज्यादा समझदार था। पर उसकी तबीयत हमेशा खराब रहती थी। एक दिन मिन्टू का जन्मदिन आया, तभी पुरा देश कोरोना महामारी से गुजर रहा था। अपना जन्मदिन बाहर मनाना चाह रहा था, चिन्टू मिन्टू को समझाया कि इसबार जन्मदिन का आयोजन घर में ही करो बाहर जाना खतरों से खाली नहीं है पर मिन्टू नहीं माना। खुद तो बाहर गया ही, जबर्दस्ती चिन्टू को भी बाहर लेकर गया। पार्टी में बहुत सारे दोस्त इक्टठा हुए। मिन्टू खुशी-खुशी घर वापस आ गया।

कुछ दिनों बाद चिन्टू की तबीयत बहुत खराब हो गई। मिन्टू उसे अस्पताल ले गया, डॉ. से पता चला की चिन्टू को कोरोना हो गया है उसकी हालत गंभीर है। देखते ही देखते चिन्टू की मौत हो गयी। चिन्टू की मौत जन्मदिन की पार्टी में जाने से हुआ था। इस कारण मिन्टू को चिन्टू की बात न मानने पर बहुत पछतावा हुआ, लेकिन उसका यह पछतावा उसके बचपन के दोस्त को वापस नहीं ला पायी। अब मिन्टू बहुत अकेला हो गया।

राजवर्धन, कला प्रशिक्षक

खुले मन से — कहानी

एक भीखारीन थी, वह इधर-उधर घूमकर लोगों से भीख मांगकर अपना गुजारा करती थी। उसी पैसों में से बचाकर एक घड़ा में जमा करती थी। भीखारीन का कोई बच्चा नहीं था। वह बहुत दुखी रहती थी एक दिन भीखारन मेले में गई। उसे एक अनाथ बच्चे की रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उस मेले से बच्चों को अपने साथ लेकर आई। उन बच्चों को भीखारीन बहुत प्रेम करती उनका पालन-पोषण करती थी। अपने कुछ पैसों में से बचाकर बच्चों की शिक्षा दीक्षा के लिए घड़ा में पैसा को रखती थी। इस तरह से भिखारीन भीख मांगकर अपना जीवन गुजारती उन्ही पैसों में से बचाकर अपनी संतान की शिक्षा भी देती रही और अपनी आगे के जीवन के लिए बचत भी करती थी।

रजियां खातुन, कक्षा-8, ग्राम-बाबु भटकन

मोबाईल — अपनी बात

मेरे घर में एक बड़ा वाला मोबाईल है जो मेरी मां के पास रहता है। जब भी पापा दिल्ली से फोन करते है, तो मेरी मां और मेरे सारे भाई बहन उनसे बात करते है, और हमसब मोबाईल के माध्यम से अपने पापा को सारी बाते बताते है। वह भी हमलोग से अपनी सारी बाते बताते है मोबाईल में नेट पैक रहता है तो वह विड़ियो कॉल करते है मेरी एक फूआ है, वह भी मोबाईल से बात करती है। हमलोगों का सामाचार पुछती है मेरी मां से दुख सुख वाली बातें करती है, घर बैठे बैठे मोबाईल के माध्यम से हमें सभी लोगों का समाचार मिलता रहता है। मोबाईल हमारे लिए जरुरी है।

मनिषा कुमारी, कक्षा-5, बलिया

विज्ञान से प्रश्न

प्रश्न- माचिस की तीली जलती कैसे है?

उत्तर- बच्चों जब भी हमें कोई चीज जलानी होती है तो अकसर हम माचिस का प्रयोग करते है। माचिस की डिबिया से हम एक तीली निकालते हैं और उसे माचिस की कम चौड़ाई वाली साइड जहां लाल रंग का मशाला लगा होता है वहां रगड़ते है। रगड़ने पर तीली जल उठती है।

तुम्हारे मन में तो यह प्रश्न उठता ही होगा कि रगड़ने पर माचिस की तीली में आग कैसे लग जाती है। बच्चों तुमने यह तो देखा ही होगा कि माचिस की तीली को आग केवल तभी लगता है, जब उसे माचिस की साइड वाली खुरदुरी सतह पर रगड़ा जाता है। अगर क्या हम किसी अन्य खुरदुरी जगह पर तीली को रगड़े तो वह जलेगी नही? क्योंकि माचिस की खुरदुरी सतह फास्फोरस के यौगिकों से बनी होती है। फास्फोरस जरा सी उष्मा पाते ही चिंगारी देने लग जाती है। क्योंकि फास्फोरस का ज्वलन ताप बेहद कम होता है। इसके साथ-साथ माचिस के तीली के एक सिरे पर पोटेशियम क्लोरेट लगा होता है जो काफी ज्वलनशील पदार्थ होता है। इसे माचिस के खुरदुरी सतह पर रगड़ने पर उष्मा की उत्पती होती है इस उष्मा से चिंगारी की उत्पती होता है तथा चिंगारी के उत्पती से तीली पर लगा पोटेशियम क्लोरेट जलने लगती है जिसके कारण बाद में तीली भी जलने लगती है।

सुधीर सिंह, विज्ञान प्रशिक्षक

चुटकुले

अध्यापक-मैं जो कुछ पूछूं उसका जबाव फटाफट देना।
छात्र-जी सर,
अध्यापक-भारत की राजधानी बताओ?
छात्र-फटाफट, इस पर सर गुस्सा हो गए
छात्र-आपने ही ने तो कहा था, कि जो पूछूं, जबाव फटाफट देना।

खुशी कुमारी, कक्षा-5, बलियां

टीचर- बहुवचन किसे कहते है।
पप्पू- जब बहू अपने ससुराल वालो को खरी-खोटी सुनाती है, तो उसे बहु वचन कहते है।
टीचर-जी बेहोश होते होते बचे।

विशाल कुमार गुप्ता, कक्षा-५, भवराजपुर

खुले मन से — आपबीती

निधु कुमारी
कक्षा 7
गाँव गोंठी

हमारे पड़ोसी बहुत अच्छे है, जो हमें बहुत सहायता करते है। उनका नाम राम भगत है। वे हमें कोई भी कठिनाई में सहयोग करते हैं, जब हम उनके घर जाते हैं, तो वे चाय, बिस्कुट तथा अन्य खाना खाने को कहते है। वे गरीब एवं असहाय लोगों की मदद भी करते हैं, एवं अच्छे से उनका स्वागत भी करते हैं जैसे- भगवान को स्वागत किया जाता है। हमारे पड़ोसी राम भगत जी कभी किसी से झगड़ा नहीं करते हैं, और किसी भी चीज को आपस में बांट कर खाते है। और कोई भी निर्णय लेने से पहले वह सभी से सलाह लेते है। ऐसे पड़ोसी बहुत कम ही मिलते है, उनके नेक विचार एवं सच्चाई पर मुझे बहुत ज्यादा गर्व महसूस होता है। पड़ोसी हो तो ऐसे हो।

पलक शर्मा, कक्षा-8, बड़हुलिया

हमारे बालचित्रकार

राजकुमार
कक्षा ५, गाँव नरेन्द्रपुर

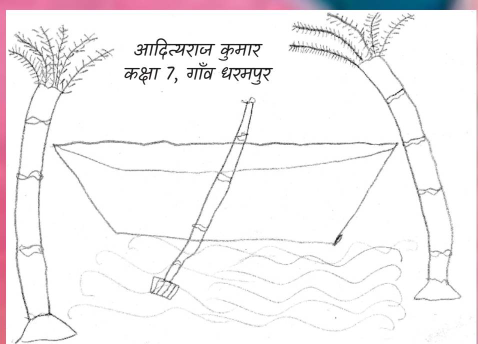

आदित्यराज कुमार
कक्षा 7, गाँव धरमपुर

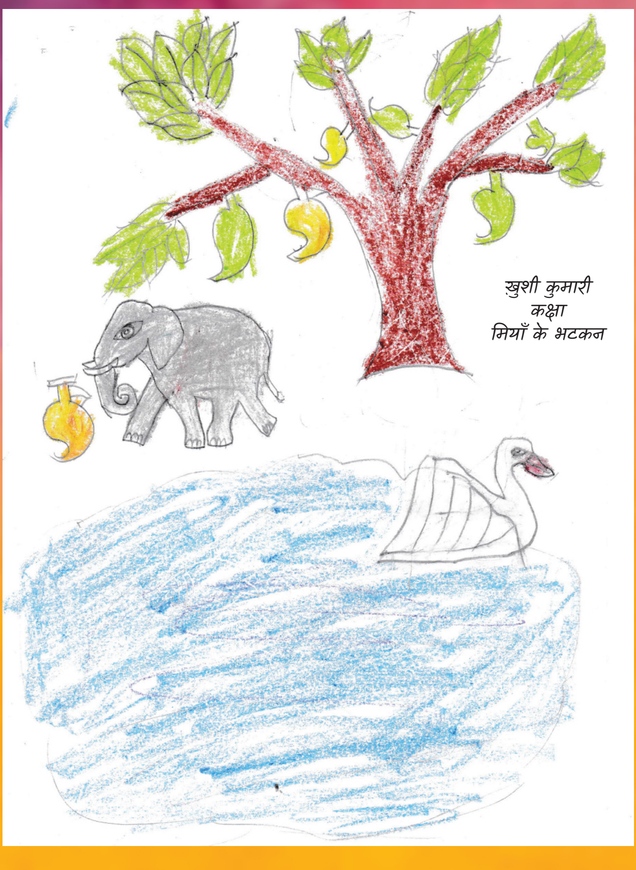

ख़ुशी कुमारी
कक्षा
मियाँ के भटकन

बेबी कुमारी
कक्षा 1
मियाँ के भटकन

खुशबू कुमारी
कक्षा ५, गाँव गोंठि

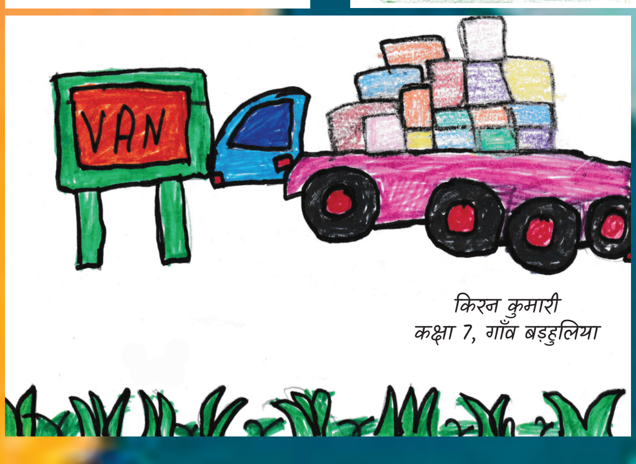

किरन कुमारी
कक्षा 7, गाँव बड़हुलिया

मेरा दुकान — आपबीती

मेरे घर में एक दुकान है। दुकान में दो दरवाजा है। मेरे दुकान में साबुन, सैम्पू, बहुत सारी मिठाइयां, अलग-अलग तरह के बिस्कुट कुरकुरे इत्यादि चीजे मिलती है। मेरे दुकान में कुछ मशाले एवं विमल पुकार कमला पसंद इत्यादि चीजे भी मिलती है। लॉकडाउन होने के कारण मेरे दुकान में अभी कम लोग आते है, इसलिए मेरी दुकान की समान कम बिक्री होती है।

नीतु कुमारी, कक्षा-6, भवराजपुर

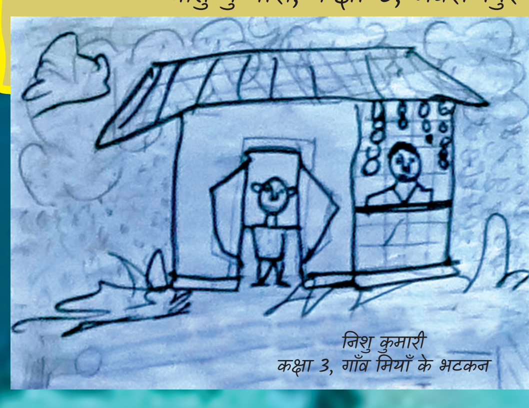

निशु कुमारी
कक्षा 3, गाँव मियाँ के भटकन

खुले से प्रश्न

प्रश्न- एक ऐसी संख्या है जिसे चाहे 3/4 में जोड़े या गुणा करे, उत्तर एक ही आएगा?

ज्योति कुमारी, कक्षा-6, मियां के भटकन

प्रश्न-एक चीज ऐसी भी है जिसमें छेद ही छेद होते है। फिर भी उसमें पानी ठहर जाता है। सोचो वह क्या है?

दीपमाला कुमारी, कक्षा-7, घर मियां के भटकन